International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2, February 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मध्यकालीन भारतीय इतिहास का स्रोतः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रतिभा सिंह*

सल्तनत काल की अपेक्षा मुगलकालीन साहित्य ज्यादा उपलब्ध हैं। ये स्रोत ज्यादातर अरबी व फारसी भाषा में लिखें गए हैं। मुगलकाल के ज्यादातर स्रोत फारसी भाषा में लिखे गए हैं। ये इतिहासकार ज्यदातर सुल्तानों और बादशाहों की राजनैतिक और सैनिक गतिविधियों की ही जानकारी देते हैं और इनसे हमें जनता की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की जानकारी कम मिलती है, जिसके लिए हमें समकालीन साहित्य स्रोतों और भारत आये यात्रियों के विवरण का सहारा लेना पड़ता है। मध्ययुग में अनेक ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे गये, जिनसे हमें इस युग की राजनीतिक घटनाओं के बारे में जानकारी मिलती है। मुसलमानों के सम्पर्क में आने के बाद भारतीय भी इस लोक की तरफ आकर्षित हुए। इस काल के ग्रंथों में सभ्यता एवं संस्कृति का उल्लेख बहुत कम हुआ है ।

प्राचीन काल से ही भारत का विदेशों के साथ सम्बन्ध रहा है। यूनान, रोम, चीन, तिब्बत और अरब और अन्य प्रदेशों के यात्रियों ने भारत का भ्रमण किया और अपनी रचनाओं में भारत के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किये, जिनका उपयोग हम इतिहास लेखन में करते हैं .

सिकन्दर के पूर्व के यूनानी लेखक–टेसियस और हेरोडोटस यूनान और रोम के प्राचीन लेखकों में से हैं। टेसियस 'ईरानी राजवैद्य' था, उसने भारत के विषय में समस्त जानकारी ईरानी अधिकारियों से प्राप्त की थी। हेरोडोटस, जिसे 'इतिहास का पिता' कहा जाता है, ने 5 वी. शताब्दी में ई.पू. में 'हिस्टोरिका' नामक पुस्तक की रचना की थी, जिसमें भारत और फारस के सम्बन्धों का वर्णन किया गया है।

सिकन्दर के बाद के लेखक–सिकन्दर के बाद के लेखकों में महत्त्वपूर्ण था मेगस्थनीज जो यूनानी राजा सेल्यूकस का राजदूत था। उसने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में करीब 14 वर्षो तक समय व्यतीत किया। उसने 'इण्डिका' नामक ग्रंथ की रचना की जिसमें तत्कालीन मौर्यवंशीय समाज एवं संस्कृति का विवरण दिया था। डाइमेकस, सीरियन नरेश अन्तियोकस

का राजदूत था जो बिन्दुसार के राजदरबार में काफी दिनों तक रहा। डायोनिसियस मिस्र नरेश 'टॉलमी फिलाडेल्फस' के राजदूत के रूप में काफी दिनों तक सम्राट अशोक के राज दरबार में रहा था। अन्य पुस्तकों में 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी', लगभग 150 ई. के आसपास टॉलमी का भूगोल, प्लिनी का 'नेचुरल हिस्टोरिका' (ई. की प्रथम सदी) महत्त्वपूर्ण है। 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' ग्रंथ जिसकी रचना 80 से 115 ई. के बीच हुई है, में भारतीय बन्दरगाहों एवं व्यापारिक वस्तुओं का विवरण मिलता है। प्लिनी के 'नेचुरल हिस्टोरिका' से भारतीय पशु, पेड़–पौधों एवं खनिज पदार्थो की जानकारी मिलती है।

चीनी लेखक–चीनी लेखकों के विवरण से भी भारतीय इतिहास पर प्रचुर प्रभाव पड़ता है। सभी चीनी लेखक यात्री बौद्ध मतानुयायी थे और वे इस धर्म के विषय में कुछ विषय जानकारी के लिए ही भारत आये थे। चीनी बौद्ध यात्रियों में से

* डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

प्रमुख थे–फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, मल्वानलिन, चाऊ–जू–कुआ आदि। मल्वानलिन ने हर्ष के पूर्व अभियान एवंश्चाऊ–जू–कुआश्ने चोलकालीन इतिहास पर प्रकाश डाला।

नालन्दा में फाह्यान ने बुद्ध के शिष्य 'सारिपुत्र' की अस्थियों पर निर्मित स्तूप का उल्लेख किया, इसके बाद वह राजगृह, बोधगया एवं सारनाथ की यात्रा के बाद वापस पाटलिपुत्र आया, जहां कुछ समय बिताने के बाद स्वदेश लौट गया। इस दौरान फाह्यान ने लगभग 6 वर्ष सफर में एवं 6 वर्ष अध्ययन में बिताया। पाटिलपुत्र में संस्कृत के अध्ययन हेतु उसने 3 वर्ष व्यतीत किये। फाह्यान ने अपने समकाली नरेश चन्द्रगुप्त द्वितीय के नाम की चर्चा न कर उसकी धार्मिक सहिष्णुता की नीति एवं कुशल प्रशासन की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। उसके अनुसार इस समय जनता सुखी थीं, कर का भार अल्प था, शारीरिक दण्ड एवं मृत्युदण्ड का प्रचलन नहीं था, अर्थदण्ड ही पर्याप्त होता था।

समाज का वर्णन–तत्कालीन समाज पर प्रकाश डालते हुए फाह्यान ने कहा है कि, लोग अतिथि परायण होते थे। भोजन में लहसुन, प्याज, मदिरा, मांस, मछली का प्रयोग नहीं करते थे। फाह्यान ने चाण्डाल जैसी अस्पृश्य जाति का भी उल्लेख किया है, जिनका एक तरह से सामाजिक बहिष्कार किया जाता था। वैश्य जाति की प्रशंसा फाह्यान ने इसलिए की, क्योंकि इस जाति ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार एवं भिक्षुओं के विश्राम हेतु मठों के निर्माण में काफी धन व्यय किया था।

आर्थिक दशा–गुप्त कालीन आर्थिक दशा पर प्रकाश डालते हुए फाह्यान ने कहा है कि, इस समय साधारण क्रय–विक्रय में कौड़ियों का प्रयोग होता था। इस समय भारत का व्यापार उन्नत दशा में था। फाह्यान ने इस समय बड़े–बड़े जहाजों को चलाने की भी बात कही है। उसके वर्णन के अनुसार उसने स्वयं स्वदेश वापस जाते समय एक बड़े जहाज
में बैठ कर ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से प्रस्थान किया था। फाह्यान ने अपने समकालीन भारतीय सम्राट के विषय में बताया है कि, वे विद्धानों के संरक्षक थे। फाह्यान ने मंजूश्री नाम के विद्धान का वर्णन भी किया है।

ह्वेन सांग–ह्वेन सांग, युवान चांग या युआन–त्यांग (संस्कृतः मोक्षदेव, अंग्रेजीः Xuanzang) एक प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु था जिसका जन्म चीन के लुओयंग स्थान पर सन् 602 ई. में हुआ था। इसके साथ ही वह एक दार्शनिक, घुमक्कड़ और अनुवादक भी था। उनका मूल नाम चेन आई था। ह्वेन त्सांग, जिन्हें मानद उपाधि सान–त्सांग से सुशोभित किया गया। उन्हें मू–चा ति–पो भी कहा जाता है। जिन्होंने बौद्ध धर्मग्रंथों का संस्कृत से चीनी अनुवाद किया और चीन में बौद्ध चेतना मत की स्थापना की। इसने ही भारत और चीन के बीच आरम्भिक तंग वंश काल में समन्वय किया था।

ह्वेनसांग ने तत्कालीन भारत को हर क्षेत्र में समृद्धिशाली बताया है। इस समय गाय का मांस खाने पर पूर्णतः प्रतिबन्ध था। ह्वेनसांग ने पाटलिपुत्र के पतन एवं उत्तर भार के नवीन नगर कन्नौज के उत्थान पर प्रकाश डाला है। उसके अनुसार कन्नौज में लगभग 100 संघाराम एवं 200 हिन्दू मन्दिर थे। ह्वेनसांग ने उस समय रेशम एवं सूत से निर्मित 'कौशेय'

नामक वस्त्र का भी वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त उसने क्षौम, लिनन, कम्बल जैसे वस्त्र का भी वर्णन किया है। ह्वेनसांग के अनुसार इस लोख खेती का कार्य करते थे। ह्वेनसांग के अनुसार इस समय औद्योगिक क्षेत्र में व्यावसायिक श्रेणियों एवं निगमों की पकड़ मजबूत थी। शूद्र लोग खेती का कार्य करते थे।

इसी काल में चौथी बौद्ध सम्मेलन हुआ, कुषाण राजा कनिष्क की देख रेख में। सन् 633 ई. में ह्वेन त्सांग ने कश्मीर से दक्षिण की ओर चिनाभुक्ति जिसे वर्तमान में फिरोजपुर कहते हैं, को प्रस्थान किया। वहाँ भिक्षु विनीतप्रभा के साथ एक वर्ष तक अध्ययन किया। सन् 634 ई. में पूर्व में जालंधर पहुँचा। इससे पूर्व उसने कुल्लू घाटी में हीनयान के मठ भी भ्रमण किये। फिर वहाँ से दक्षिण में बैरत, मेरठ और मथुरा की यात्रा की।

ह्वेनसांग ने दक्षिण के काञ्ची एवं चालुक्य राज्य की भी यात्रा की थी। पुलकेशिन द्वितीय की शक्ति की उसने प्रशंसा की है। हर्ष के प्रशासन एवं प्रजा कल्याण की भावना का वह प्रशंसक था। ह्वेनसांग ने अपराधी प्रवृति के लोगों की संख्या के उल्प होने की बात कही है। शारीरिक दण्ड का प्रचलन कम था तथा सामाजिक बहिष्कार एवं अर्थ दण्ड के

रूप में दण्ड दिया जाता था। ह्वेनसांग के अनुसार राजा वर्ष के अधिकांश समयों में निरीक्षण यात्रा पर रहता था और यात्रा के दौरान वह अस्थायी निर्माण कार्य करवा कर उसमें निवास करता था।

इत्सिंग–इत्सिंग एक चीनी यात्री और बौद्ध भिक्षु था, जो 675 ई. के समय सुमात्रा होकर समुद्र के मार्ग से भारत आया था। इत्सिंग ने 'नालन्दा' एवं 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' तथा उस समय के भारत पर प्रकाश डाला है। इत्सिंग 10 वर्षों तक 'नालन्दा विश्वविद्यालय' में रहा था। उसने वहाँ के प्रसिद्ध आचार्यों से संस्कृत तथा बौद्ध धर्म के ग्रन्थों को पढ़ा। 691 ई. में इत्सिंग ने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भारत तथा मलय द्वीपपुंज में प्रचलित बौद्ध धर्म का विवरण' लिखा। इस ग्रन्थ से हमें उस काल के भारत के राजनीतिक इतिहास के बारे में तो अधिक जानकारी नहीं मिलती, परन्तु यह ग्रन्थ बौद्ध धर्म और 'संस्कृत साहित्य' के इतिहास का अमूल्य स्रोत माना जाता है। अरबी लेखकः पूर्व मध्यकालीन भारत के समाज और संस्कृति के विषयों में हमें सर्वप्रथम अरब व्यापारियों एवं लेखकों से विवरण प्राप्त होता है। इन व्यापारियों और लेखकों में मुख्य हैं–अलबेरूनी, सुलेमान और अलमसूदी।

अलबेरूनी अबु रेहान मुहम्मद बिन अहमद अल–बयरुनी या अल बेरुनी (973–1048) एक फारसी विद्वान लेखक, वैज्ञानिक, धर्मज्ञ तथा विचारक था। अल बेरुनी की रचनाएँ अरबी भाषा में हैं पर उसे अपनी मातृभाषा फारसी के अलावा कम से कम तीन और भाषाओं का ज्ञान था–सीरियाई, संस्कृत, यूनानी। वो भारत और श्रीलंका की यात्रा पर 1017–20 के मध्य आया था। गजनी के महमूद, जिसने भारत पर कई बार आक्रमण किये, के कई अभियानों में वो सुल्तान के साथ था। अलबरुनी को भारतीय इतिहास का पहला जानकार कहा जाता था। भारत में रहते हुए उसने भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया और 1030 में तारीख–अल–हिन्द (भारत के दिन) नामक कघ्ताब लिखी। उसकी मृत्यु गजनी, अफगानिस्तान (उस समय इसे अफगानिस्तान नहीं कहा जाता था बल्कि फारस का हिस्सा कहते थे) में हुई।

तारीख–ए–फिरोजशाही

इस ग्रंथ का लेखक जियाउद्दीन बरनी था। बरनी का जन्म बल्वन के राज्यकाल में 684 हिस. 1285–86 ई. में हुआ था। वह अपने वंश का विद्वान व्यक्ति था। वह तुगलक वंश के समकालीन था। तारीख–ए–फिरोजशाही बरनी की प्रसिद्ध रचना है। इसे उसने 758 हि.स ,1357 ई. में पूर्ण किया। इसमें बल्वन के सिहासनारोहण 1265 ई. से लेकर फिरोजशाह के छठे बर्ष तक का इतिहास लिखा है। गंन्थ में उस काल के सामाजिक आर्थिक तथा न्याय

सुधारों का बड़े सुंदर ढंग से वर्णन किया गया है। बरनी राजस्व के पद पर कार्यरत था। अतः उसने अपने ग्रन्थ में राजस्व की स्थिति को बड़े विस्तार से वर्णन किया है। उसने अपने ग्रन्थ में तत्कालीन सन्तों, दार्शनिकों, इतिहासकारों, कवियों, चिकित्सकों आदि के विषय में भी अपने ग्रंथ में लिखा हैं। वरनी चूँकि शासन के उच्च पद पर आसीन था। इसलिये उस काल के शासन के विषय में उसने जो कुछ लिखा है, उसे हम प्रमाणिक मान सकते हैं

फतवा–ए–जहांदारी

इस कृति के रचनाकार के रूप में जियाउद्दीन बरनी जाने जाते हैं। बरनी ने इस गंन्थ में अलाउद्दीन के अनेक आर्थिक सुधार एवं सिद्धान्तों को लिखा गया है। फतवा–ए–जहांदारी की केवल एक हस्तलिखित प्रति इण्डिया आफिस के पुस्तकालय में मिलती है। इसमें 248 पृष्ठ हैं। कही–कही पृष्ठों के बीच का भाग मिट गया है। बरनी ने इस ग्रन्थ में अपना नाम कही नही लिखा हैं। किन्तु ''दुआगोये सुल्तानी'' सुल्तान का हितैषी 'शब्द लेखक के लिए लिखा है। वह लिखता है,कि प्राचीन लेखकों ने राज्य व्यवस्था सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे किन्तु बादशाहों, मंत्रियों, मालिको तथा अमीरों के पथ प्रदर्शन के लिए जिस प्रकार राज्य संम्बन्धी अधिनियमों का उल्लेख इस ग्रन्थ में किया। इस प्रकार का लेखन किसी लेखक ने नही किया। इस ग्रन्थ में राज्य सम्बन्धी उपदेश दिये गये। यह माना जाता है कि मिनहाज उस सिराज ने जहाँ अपना इतिहास समाप्त किया है।

बबरनामा

बाबर द्वारा रचित तुर्की भाषा की इस कृति कों तुजुके बाबरी भी कहा जाता है। शेख जेतुद्दीन ख्वाजा ने इसका सर्वप्रथम फारसी में अनुवाद किया। जो सदर–उस–सदर के पद पर था। इसमें खानवा तक की लड़ाई का उल्लेख है। 1583 ई. में अकबर ने पुनः खान–ए–खाना को इसके अनुवाद का आदेश दिया। और 1589–90 ई. में इसका अनुवाद किया गया। अग्रेजी में इसका अनुवाद 1826 ई. में मिसेज ए. एसबेवरीज ने किया। यह ग्रन्थ भारत की 1504 ई. से 1529 ई. तक की राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति पर वर्णनात्मक प्रकाश डालता है। इस ग्रन्थ में बाबर ने भारत वर्ष की राजनीतिक और आर्थिक दशा का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। प्रकृति प्रेमी होने के कारण उसने इस ग्रंथ में देश की वनस्पति, पशु–पक्षियों का भी वर्णन किया है।

अकबरनामा

अबुल फजल ने सन् 1597–98 ई. में अकबरनामा पूर्ण किया था। इसकी रचना में सात वर्ष का समय लगा था। यह तीन जिल्दों में बँटा हुआ है। इसकी तीसरी जिल्द आइने–ए–अकबरी है। यह अकबरनामा की जान है, उसने अलग ग्रन्थ का नाम ग्रहण कर लिया है। अकबरनामा बादशाह अकबर के काल का अधिकारिक एक राजकीय इतिहास है। जो बादशाह के निर्देश एवं प्रश्रय में लिखा गया था। अबुल फजल ने अकबरनामा में आदम से लेकर अकबर के शासन के 46 वें वर्ष तक का वर्णन किया है । इसके विषय में हरवंश मुखिया ने लिखा है कि ''अकबरनामा का विभाजन राज्यकाल पर आधारित है और प्रत्येक शासन के राज्यकाल की घटनाओं को वह क्रमिक आधार पर लिखता है परंतु जब वह अकबर के शासनकाल की घटनाओं को लिखता हैं। तो उसके शासनकाल को एक रूप न मानकर वह इसे वार्षिक वृतान्त का रूप दे देता है।'' अपनी इस रचना के लिये अबुल फजल ने समकालिक दरबारी रिकार्ड से सामग्री तो प्राप्त की है। इसके साथ ही राजपरिवार के बुजुर्ग सदस्यों के संस्मरणों एवं विवरणों से भी सामग्री ग्रहण की है।

मुन्तखाब–उत–तवारीख

इस ग्रन्थ की रचना अब्दुल कादिर बदायुनी ने की थी। यह ग्रंथ जहांगीर के शासनकाल में प्रकाश में आया। इसे तारीख–ए–बदायूँनी के नाम से भी जाना जाता है। मुन्तखाव–ए–तवारीख की रचना बदायूँनी ने 1590 ई. में शुरू की थी। इसे फरवरी 1596 ई. में पूरा कर दिया था। वह ऐतिहासिक कृति तीन भागों में विभक्त है । पहले भाग में सुबुक्तगीन से लेकर हुमाऊँ की मृत्यु तक का विवरण मिलता है। दूसरे भाग में अकबर के प्रथम चालीस वर्षों की जानकारी दी गयी है। तीसरे भाग में सन्तों कवियों विद्वानों की जानकारी मिलती है। बदायूँनी ने अकबर के शासनकाल में हुये युद्धों की जानकारी व प्रशासनिक संस्थानों का विवरण दिया है। स्पष्ट है कि मुगलकालीन इतिहास लेंखन में बदायूँनी का महत्वपूर्ण स्थान है। उसने अपने लेखन में सामाजिक, आर्थिक,गतिविधियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इस दृष्टि से उसकी कृति रूढ़ीवादी विचारों के बावजूद भी महत्वपूर्ण है। खालिद अहमद निजामी की सोच है कि अकबरकालीन इतिहासकारों में मात्र बदायूँनी ही एक इतिहासकार है ।

तुजुक–ए–जहांगीरी

बादशाह जहांगीर स्वयं एक इतिहासकार था। उसे लिखने का बड़ा शौक था। उसने अपनी आत्मकथा तुजुक–ए–जहांगीरी नाम से लिखी। यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति है। इससे हमें समकालीन राजनैतिक गतिविधियों की बड़े रूप में जानकारी प्राप्त होती है। जहांगीर ने अपने शासनकाल के 12 वें वर्ष तक की घटनाओं की जानकारी स्वयं लिखी थी। इसके पश्चात् उसने यह कार्य मोताबिद खाँ जो बख्शी के पद पर था सौंप दिया। मोताबिद खाँ ने 19 वर्ष तक अपना लेखन कार्य सामान्य भाषा में किया। इसका नाम सर्वप्रथम इकबालनामा–ए–जहाँगीरी रखा। जहाँगीर की मृत्यु तक इसकी संपूर्ण जानकारी इस ग्रंथ में मिलती है। यह तीन भागों में विभक्त है। पहला भाग बाबर तथा हुमायू से संबंधित है। दूसरे भाग में अकबर का विवरण है। तीसरे भाग में जहाँगीर का वृतान्त है।

मुन्तखव–उल–लुबाव

इस ग्रन्थ के लेखक का नाम मुहम्मद हाशिम खाँफी खाँ था। जो इतिहास लेखन के रूप में काफी प्रसिद्ध थे। वह एक सुलझा हुआ इतिहासकार था। इस फारसी ग्रंथ मुन्तखव–उल–लुबाब में तैमूर के वंश का इतिहास दिया गया है। यह ग्रंथ तीन भागों में विभक्त है। इसके पहले भाग में तुर्को की भारत विजय से लेकर लोदी वंश तक का इतिहास दिया गया हैं। इसके दूसरे भाग में क्षेत्रीय एवं प्रांतीय वंशों के इतिहास की झलक मिलती है। इसके तीसरे भाग में औरंगजेब के शासनकाल का पूरा इतिहास दिया गया है। खाफी खाँ ने अपने समय 1680 ई. से 1733 ई. की घटनाओं का विवरण व्यक्ति अनुभव के

आधार पर निष्पक्ष रूप से लिखा है।

बर्नियर का यात्रा विवरण

बर्नियर का जन्म फ्रांस के जोई नामक स्थान पर 1620 ई. में हुआ था। बचपन से ही उसे घूमने फिरने का शौक था। अतः छात्र जीवन से ही यूरोप के कई देशों की यात्रा कर ली थी। डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर वह पेशे से चिकित्सक बना। भारत यात्रा की अपनी प्रबल इच्छा के कारण 1658 ई. में वह भारत यात्रा पर आया। यह वह समय था जबकि शाहजहां के पुत्रों के उत्तराधिकार का युद्ध चल रहा था। इस युद्ध की कई घटनाओं का वह प्रत्यक्षदर्शी बना। अपने करीब 10 वर्ष के भारत प्रवास में उसने भारत की कई नगरों की यात्रा की। भारत की राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति का विस्तृत वर्णन बर्नियर ने अपने यात्रा वृतान्त 'Travels in the Mughal Empire' में किया है भारत में उसने सूरत, अहमदाबाद, आगरा, दिल्ली, पंजाब, कश्मीर मसुलीपट्टम, गोलकुडा एवं बंगाल आदि कई स्थानों की यात्रा की । बंगाल की यात्रा तो बर्नियर एवं टैवर्नियर ने साथ–साथ की थी।

निष्कर्ष

मध्यकालीन आर्थिक इतिहास की जानकारी के लिए अभिलेखों, सिक्कों, स्मारकों, धार्मिक साहित्य ,धर्मेतर साहित्य, विदेशी यात्रियों के विवरण के आधार पर इतिहासकारों ने प्रमाणिक आर्थिक इतिहास का निर्माण किया हैं। हमारा साहित्य मूलतः धार्मिक है, किन्तु मध्यकाल में यह समस्या नहीं है, प्राचीन काल की अपेक्षा इस युग में अनेक ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना हुई। विदेशी मुसलमानों के संपर्क में आने के कारण भारतीयों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। व्यक्ति का ध्यान इस काल में आध्यात्मिकता के साथ–साथ भौतिक जगत की ओर भी जाने लगा। इस कारण ही धार्मिक, दार्शनिक ग्रंथों के अतिरिक्त अनेक प्रमाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे गये। सल्तनत व मुगलकाल में फारसी तथा अरबी के ग्रंथों की रचना की गई। इन ग्रंथों की रचना करने वाले अधिकांशतः विदेशी तुर्क या अफगानी थें। ये लेखक भारत में इस्लाम की प्रगति के साथ–साथ दरबारी मामलों, आर्थिक मामलों में भी रूचि रखते थे। इसलिए इनके ग्रंथों की विषय–सामग्री निष्पक्ष नहीं कही जा सकती हैं। इन लेखकों को हम वैज्ञानिक इतिहासकारों की श्रेणी में नहीं रख सकते क्योंकि वे केवल तत्कालीन शासकों के कार्यकलापों तक ही सीमित थे।

इस प्रकार कहा जा सकता है, कि जहां पुरातात्विक साक्ष्यों से मध्यकालीन इतिहास की अर्थव्यवस्था की प्रमाणिक जानकारी मिलती है, तो वही साहित्यिक स्त्रोत इसकी पुष्टि करते दिखाई देते है। अभिलेखों, भवनों, स्मारकों, किलों, सिक्कों, के साथ अरबी, फारसी, संस्कृत भाषा के साहित्य से भी तत्कालीन अर्थव्यवस्था संबंधी जानकारी मिलती है। सल्तनत काल की अर्थव्यवस्था की अपेक्षा मुगल काल की अर्थव्यवस्था स्त्रोतो के आधार पर सुदृढ़ दिखाई देती है। मध्यकालीन आर्थिक इतिहास के साहित्यिक स्त्रोतों में कुछ अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन भी किया गया है,किन्तु काफी कुछ वर्णन प्रमाणिक भी माना जा सकता है।

मध्ययुगीन स्थापत्य कला में नवीन शैली के अन्तर्गत कई भवन, राजप्रसाद, दुर्ग, मकबरे, मस्जिदें, विजय स्तम्भ और मंदिर बनवाये गये, यह आज भी विद्यमान हैं। जो सल्तनत काल व मुगल काल के आर्थिक इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं। सल्तनत काल में स्थापत्य कला के अतिरिक्त अन्य किसी कला के विकास का हमें कोई प्रमाण

नहीं मिलता है। इससे स्पष्ट है, कि दिल्ली सुल्तानों को स्थापत्य से प्रेम था। तुर्को ने भारत में जिन इमारतों का निर्माण कराया उन पर देशी कला परम्पराओं का प्रभाव था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- एल.पी. शर्मा, मध्यकालीन भारत (1000–1761 ई.), नई दिल्ली
- इरफान,हबीब,भारतीय इतिहास में मध्यकाल,नई दिल्ली,1999
- बी.के. श्रीवास्तव, भारतीय इतिहास की विषयवस्तु, आगरा, 2009 चन्द्र,सतीश, मध्यकालीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1990
- पांडेय, अवधबिहारी, पूर्व मध्यकालीन भारत, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, 1959
- रहातुल कुलुब, जैनबद्र अरबी, आगरा, 1321 हिजरी।
- श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल, भारत का इतिहास (1000–1707), शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं, आगरा 1992
- राधेशरण, मध्यकालीन भारत का सामाजिक व आर्थिक इतिहास,भोपाल
- सरकार, जदुनाथ, शिवाजी और उनका काल, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं., आगरा, 1964
- वर्मा,हरीशचन्द्र,मध्यकालीन भारत ,खण्ड 1,नई दिल्ली, 1993
- नूह सिपेहर, अमीर खुसरो, वहीद मिरजा, कलकत्ता, 1948।
- अहमद बशीर, एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जस्टिस ड्यूरिंग मुस्लिम रूल इन इण्डिया, अलीगढ़, 1941।